ISBN: 978-81-974088-0-9

10. वर्तमान समाज में दिव्यांग बालको की – शैक्षिक स्थिति एवं समस्यायें

श्रीमती मेनका चंद्राकर

विभागाध्यक्ष, बी. एड. विभाग,
शांत्रीबाई कला वाणिज्य विज्ञान महाविद्यालय,
महासमुन्द (छ.ग.).

परिचय :–

किसी शारिरिक या मानसिक विकार के कारण सामान्य मनुष्य की तरह कार्य करने में अक्षम या कार्य करने में परेशानी हो तो वह दिव्यांग कहलाते है।

दिव्यांगता विशेष रूप से भारत जैसे विकासशील देश में एक गंभीर समस्या है, विकलांगता जन्मजात ही नहीं अपितु जन्म के बाद भी हो जाती है. जैसे दुर्घटना, सबसे बड़ी विकलांगता जन्म के बाद होती है वह पोलियों ग्रसित होने पर होती है. जिजे वर्तमान में टीकाकरण के द्वारा काबू में लाया जा सका ही दिव्यांगता के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने के लिये संयुक्त राष्ट्र अमेरिका द्वारा 03 दिसंबर को विश्व विकलांग दिवस घोषित किया गया है।

सामान्य शब्दों में दिव्यांगता को उस श्रेणी में रखा गया है जिसे श्रेणी के व्यक्ति किसी भी कार्य को करने में सक्षम नहीं है। जैसे आँख से दिखाई ना देना, कान से सुनाई ना देना, ठीक से पढ़ या समझ ना पाना, शरीर में हाथ, पाँव का ना होना या फिर शरीर के अंग होते हुये भी उन अंगो का ठीक में कार्य नहीं कर पाना ये सभी दिव्यांगता के अंतर्गत आते है।

संकेत शब्द – विकार दिव्यांगता, ग्रसित, अक्षम, काबू, सक्षम

प्रस्तावना :–

समाज वह जगह है जहां सक्षम व्यक्ति ही शासन करता है, अपवादों को छोड़कर जन्मजात दिव्यांग को समाज एक बार किसी भी स्थिती में अपना लेती है। परन्तु जन्म के बाद होन वाले दिव्यांगकता को समाज आसानी से स्वीकार नहीं करता जीवन भर उसे कोसता या ताने मारता रहता है हर व्यक्ति चाहता है कि उनका बच्चा स्वस्थ पैदा हो, परन्तु यदि बच्चा

विकलांग पैदा हुआ तो उनकी विकलांगता को उनके माता पिता या उसके बुरे कर्मों की सजा मानी जाती है विकलांग व्यक्ति केवल शारीरिक कमियों से ही विकलांग नहीं होता अपितु छोटी सोच बाले व्यक्ति भी विकलांगता की श्रेणी में आते है। जन्मजात विकलांगता किसी भी कारण से हो हम विज्ञान को महत्व ना देकर प्रकृति ईश्वर को महत्व देते है और कर्म या भगवान की मर्जी कहकर स्वीकार कर लेते है परन्तु कहते है ना भगवान जब हमसे कुछ लेता है तो उसका 100 गुणा करके हमे वापस दे देता है ऐसा ही कुछ विकलांग लोगो के साथ भी होता है भगवान भले ही उन्हें विकलांग पैदा करते है परन्तु अन्य शक्तियों को 100 गुणा वापस करता है।

उद्देश्य :– विकलांग व्यक्तियों के अध्ययन से हमारा उददेश्य उनके मन की बातों को जानना है जो निम्न है –

1) विकलांग व्यक्तियों के अध्ययन का उद्देश्य उनके साथ हो रहे विसंगतियों को दूर करना है।
2) विकलांग व्यक्तियों के अध्ययन से हमारा उद्देश्य उनको आत्मनिर्भर बनाना और उसे समाज में सम्मानीय स्थान प्रदान करना है।
3) विकलांग व्यक्तियों के अध्ययन का उद्देश्य उनकी मानसिकता को जानना कि वे क्या चाहते है।
4) दिव्यांग व्यक्ति के अध्ययन का उद्देश्य उसे आत्मघाती फैसले से दूर रखना।

विकलांग व्यक्तियों की विभिन्न समस्याएँ :– विकलांग व्यक्तियों का विकलांग होना ही एक बहुत बड़ी समस्या है, इसके बावजूद उन्हें समाज में रहते हुये अनेक समस्याओं का सामना करना पढ़ता है, जो निम्न है –

1) दैनिक समस्यायें –

दिव्यांग व्यक्ति का दैनिक जीवन सामान्य व्यक्ति से बिल्कूल अलग होती है उन्हे अपने रोजमर्रा के कार्य से लेकर सभी कार्यो में परेशानियों का सामना करना पड़ता है, जैने कि कोई व्यक्ति सून नहीं पाता, कोई बोल नहीं पाता, कोई देख नहीं पाता आदि ना सुन पाने वाला व्यक्ति सुनता नहीं तो उसे समझने में कठिनाई होती है ना बोल पाने वाला व्यक्ति अपने विचारों भावों

को प्रदर्शित नहीं कर पाता, ना देख पाने वाला व्यक्ति कुछ बता नहीं पाता ऐसे बहुत सी समस्या दैनिक जीवन में होती है।

2) आर्थिक समस्यायें :–

एक सामान्य व्यक्ति को अर्थपार्जन में बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, दिन भर की मुश्किलों का सामना करते हुये वह व्यक्ति अपने लिये धनोपार्जन करता है ठीक इसके विपरित हम दिव्यांगों के लिये कल्पना भी नहीं कर पाते की उन्हे कितनी समस्याओं का सामना करना पड़ता होगा

1) शिक्षण कार्य में समस्या के कारण बहुत अधिक नहीं पढ़ पाना जिसके कारण सरकारी नौकरी नहीं मिल पाती।
2) दिव्यांगों को प्राइवेट सेक्टरों में नौकरी नहीं मिलता।
3) बहुत से कार्यों पर दूसरो पर निर्भर होना।
4) दिव्यांग होने के कारण बहुत अधिक मेहनत ना कर पाना।
5) 80% दिव्यांगों में सकारात्मक सोच की कमी।

सामाजिक समस्यायें :–

80% से भी अधिक दिव्यागों के बहुत सी सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो निम्न है

1) समाज की कुठित मानसिकता
2) समाज के लोगों का सहयोग ना होना
3) समाज के लोगों की कथनी और करनी में अंतर
4) समाज का एकजुट ना होना
5) उन्हें सरकार द्वारा दिये गये सुविधाओं योजनाओं का लाभ नहीं मिल पाता।

शैक्षिक समस्यायें :–

शिक्षा के क्षेत्र में दिव्यांगों को बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है

1) किसी के सहारे के बिना विदयालय नहीं जा पाना – दिव्यांगता एक ऐसा अभिशाप है की उसे ना चाहते हुये भी लोगों का सहारा लेना ही पड़ता है बहुत से काम ऐसे है जो बिना सहारे के कर पाना संभव नहीं है इन्हीं में से एक है विद्यालय जाना जो कि अधिकतर बिना किसी के जा पाना संभव नही है।

2) सामान्य बालकों के साथ पढ़ने में कठिनाई होना – विकलांग बालक यदि विशेष आवश्यकता वाले विद्यालय में ना जा कर सामान्य बालकों के विद्यालय में पढ़ने जाता है तो उसे बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है जैसे चल कर नहीं जा पाना आंखो से देख नहीं पाना आदि।

3) माता–पिता का अपने बच्चों को घर से दूर भेजने के लिये डरना – विकलांग बच्चों के माता–पिता अक्सर विशेष आवश्यकता वाले विद्यालय में भेजने से डरते है क्योंकि उन्हे लगता है कि हमारा बच्चा वहाँ रह पाएगा की नहीं कुछ कर पायेगा या नही और भी अन्य डर उनके अंदर घर कर जाता है जिससे वे अपने बच्चों को दूर नहीं भेजते और वे बालक शिक्षा से वंचित रह जाते है।

4) दिव्यांग होने के कारण सामान्य बालकों की तरह शैक्षणिक पठन–पाठन न कर पाना – विकलांग बालकों की शैक्षिक समस्याओं में सबसे बड़ी समस्या यह है कि वह सामान्य बालकों की तरह पठन पाठन नहीं कर पाता उन्हें बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है जैसे – शिक्षक की आवाज नहीं सुन पाना उनके लिखे शब्दों को नहीं देख व पड़ पाना आदि।

मानसिक समस्यायें :–

1) दिव्यांगता के कारण मनोविचार में कमी।
2) परिवार जनों की कुठित मानसिकता का होना
3) मानसिक क्षमता की कमी (कुछ दिव्यांगों में)
4) मनोवैज्ञानिक रूप से उपचार ना हो पाना

5) दिव्यांगों की अपना अस्तित्व ना होना
6) अपने अस्तित्व के लिये लड़ना पड़ता है

दिव्यांगों के लिये सरकार द्वारा किये गये प्रयास

1) दिव्यांगों के लिये विशेष स्कूल का होना –

दिव्यांग विदयार्थी के लिये सरकार द्वारा एक अलग विद्यालय का निर्माण किया जाता है जिसमें उसी के समान विद्यार्थी हो जिससे हीन भावना नहीं होती।

2) दिव्यांग छात्रवृत्ति योजना :–

सरकार द्वारा दिव्यांगों के लिये छात्रवृत्ति योजना लागू की गई है जिससे मिली राशि से वे अपने पढ़ाई का खर्च स्वयं वहन कर सके।

3) दिव्यांग आवासीय योजना :–

देश में अनेक ऐसे दिव्यांग है जो शारिरीक रूप से इतने अधिक दिव्यांग है। जो अपने जीवनयापन के लिये अर्थोपार्जन नहीं कर पाते और ना ही कोई भी उनके भरण पोषण करने वाले होते है इन सभी के लिये सरकार द्वारा बहुत सी योजनायें चलायी जाती है।

निष्कर्ष :–

विकलांग व्यक्ति का जीवन सामान्य व्यक्ति के जीवन से बहुत अलग होता है, इन्हे लोग कलंक के रूप में मानते है हर युग में विकलांगता का अस्तित्व है, विकलांगता विकलांग व्यक्ति के लिये अभिशाप का काम करता है परन्तु इस बात को भी झुठलाया नहीं जा सकता है कि विकलांग व्यक्ति में कुछ ना कुछ कर गुजरने की अदभुत शक्ति होती है, जिसके चलते वे अपने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये कड़ी मेहनत करते है, दिव्यांग भारत में बड़ी संख्या में है और इस बात को झूठलाया नहीं जा सकता।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. विश्व स्वास्थ्य संगठन, कार्यशीलता, विकलांगता और स्वास्थ्य का अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (आईसीएफ), जिनेवाः 2001, डब्ल्यूयूएचओ।
2. अमेरिकी स्वास्थ्य एवं मानव सेवा विभाग। विकलांग व्यक्तियों के स्वास्थ्य एवं तंदुरूस्ती में सुधार के लिए सर्जन जनरल का आह्वाहन वाशिंगटन, डीसीः अमेरिकी स्वास्थ्य और मानव सेवा विभाग, सर्जन जनरल का कार्यालय 2005।
3. viklangta.com
7. Dristiias.com